The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences (IJARMS)
Volume 3 Issue 1, 2020

ckã.k dh mitkfr x;koky lkekftd foopuk

Mk- jkt jkuh JhokLro
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
महेश सिंह यादव कॉलेज, गया, बिहार

जाति–व्यवस्था के प्रभुत्व के लिए केवल भारतीय समाज प्रसिद्ध है। यह बात निर्विवाद है कि भारत में जिस प्रकार को जाति व्यवस्था प्राचीन काल से विद्यमान है ठीक वैसी व्यवस्था अन्यत्र नहीं पायी जाती है। यह वह एक अनोखी व्यवस्था है जो कुछ ऐतिहासिक कारणों से केवल भारत में ही विकसित हो सको। भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आज भी जाति–व्यवस्था एक मूल आधार है। इसका प्रभुत्व और प्रसार इतना है कि हिन्दुओं के अलावा जो भारतीय मुस्लिम एवं ईसाई धार्मिक समूह हैं, उनमें भी जाति व्यवस्था पायी जाती है। यजुमदार ने इसकी चर्चा इन शब्दों में की है–"जाति–व्यवस्था भारत में अनुपम है। सामान्यतः भारत जातियों एवं सम्प्रदायों की परम्परात्मक स्थलों माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ की हवा में भी जाति घुली हुई है और यहाँ तक कि मुसलमान और ईसाई भी इससे अछूते नहीं बचे है।"

जाति पूर्णतया एक हिन्दू संस्था है, परंतु कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि मुसलमानों, सिखों और इसाइयों में भी जातियाँ पायी जाती हैं। स्वतंत्रता के पूर्व जनगणना आयुक्तों ने वर्णन किया है कि भारत में जाति जैसे अन्तःविवाही स्तर अहिन्दुओं में भी पाये जाते हैं। कलकत्ता औश्र उत्तर प्रदेश के मुसलमानों, सिख, जैन और यहूदी समुदायों में जाति–व्यवस्था की तरह सामाजिक और आख्रथक संबंध प्रतिमानित होते हैं। इन समुदायों में वंशानुगत व्यावसायिक समूह अंतःविवाही श्रेणीकृत उप समूहों के रूप में पाये जाते हैं। अनेक निम्न जाति के हिन्दुओं ने इस आशा के सथ इस्लाम धर्म अपना लिया कि वे अपनी प्रस्थिति में सुधार कर सकेंगे, क्योंकि इस्लाम में जाति की तरह के विभेद नहीं पाये जाते थे। परंतु ये लोग अपनी जाति प्रस्थिति में परिवर्तन लाने में सफल नहीं हुए। भारत में मुसलमान जात प्रथा के लगभग समानान्तर हो समूहों में विभक्त है। यद्यपि इस्लाम में अपवित्राता और छुआछूत की धारणाओं के लिए कोई स्थान नहीं है, फिर भी ये मुसलमानों में पायी जाती है।

भारत में मुसलमान अशरफ और गैर अशरफ समुदायों में बँटे हुए हैं। अशरफ उच्च वंश के है और मुख्यतः शब्द में रहते है जबकि मेर अशरफ हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान बसे हुए लोग है और मुख्यतः गाँव में रहते हैं। मुसलमानों में भंगों, ककमीन, मक्का, नाई और जमींदार पादि पर आधारित विभेद भी है

और इन विभेदों के साथ सांस्कृतिक मूल्य भी जुड़ा हुआ है। सिखों और अन्य समुदायों में वृतिमूलक जातियाँ भी पायी जाती हैं, जिनके साथ कुछ अंश तक अपवित्रता और अस्पृश्यकता भी जुड़ी हुई हैं।

पूरे हिन्दू समाज में जाति एक विचारधारा बनकर प्रविष्ठ कर गयी है, उस रूप में अन्यत्रा नहीं पायी जाती है। इसीलिए जाति सांस्कृतिक दृष्टि से विशिष्ट और अनूठा व्यवस्था है। भारत में जाति किसी भी व्यक्ति के कार्य, परिस्थिति तथा उपलब्ध अवसरों के साथ ही साथ उसकी कठिनाइयों को भी निर्धारित करती है। इस कारण भारतीय सामाजिक संगठन की सबसे बड़ी विशेषता शायद जाति व्यवस्था ही है। इसी कारण ए, आर. देसाई ने कहा–"यदि भारतीय समाज का अध्येता जाति की विविधता का गहराई और सतर्कता से अध्ययन नहीं करे तो वह उस समाज के वास्तविक मूल तत्व को ही खो देगा।"

जाति–व्यवस्था और इसके अधीन विविध अवधारणाओं ने चिरकाल से विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। यही कारण है कि आज जाति का तात्पर्य, इसकी उत्पत्ति, विकास एवं विशेषताओं को लेकर भाँति–भाँति के विचार देखने को मिलते हैं। परंतु इन अध्ययनों के परिणाम स्वरूप जाति–व्यवस्था संबंधी धारणाएँ सुलझने के स्थान पर और अधिक उलझती गयी। निरंतर गंभीर एवं वैज्ञानिक अध्ययनों के उपरांत भी जब समाजशास्त्र और मानवशास्त्रा के विपारंद और अनुसन्धानकर्ता इस समस्याओं पर एकतम नहीं हो सके जो इस व्यवसा और इसका विशेषताओं एवं अन्य पहलुओं पर अध्ययन को एकल स्वतंत्रा जातियों परा क्षत्रीय अध्ययन का नई परिपाटी चल पड़ी। अब इस क्षेत्रा के लोगों ने जाति व्यवस्था पर सैद्धांतिक अध्ययन से अधिक महत्व विभिन्न जातियों को सामाजिक प्रस्थिति, उनकी जीवनशैली, समस्याओं ओर समस्याओं के समुचित निदानात्मक पहलुओं पर व्यावहारिक अध्ययन का प्रोत्साहित करना प्रारंभ किया। जाति संबंधी अध्ययन में इस प्रकार के मोड़ आने का एक कारण यह भी है कि नई पीड़ी ने जे. एच. हट्टन की इस उक्ति का यथार्थ माना कि भारतीय जाति–व्यवस्था इनती गूढ सारगर्भित विविधताओं से परिपूर्ण है कि कोई एक अनुसंधानकर्ता इस पर सर्वागीण अध्ययन कर ले यह संभव नहीं है। इस प्रकार का अध्ययन तो एक अध्ययन–दल द्वारा ही संभव है।

अतः वर्तमान अन्वषिका ने भारतीय जाति–व्यवस्था पर चहुमुखी अध्ययन को अपेक्षा एकल–जाति पर सूक्ष्म अध्ययन को उपयुक्त माना। अन्वेषिका की मान्यता है, इस प्रकार के एकल जातीय अध्ययनों से ने केवल समाज के एक खास समूह की जानकारी मिलेगी, बल्कि इस जाति में क्या और कैसे परिवर्तन आ रहे हैं, इन परिवर्तनों का कारण क्या है तथा जाति विशेष में ऐसे परिवर्तनों के प्रति क्या और कैसे परिवर्तन आ रहे है, इन परिवर्तनों का कारण क्या है तथा जाति विशेष में ऐसे परिवर्तनों के प्रति क्या और कैसी धारणाएँ व्याप्त हैं, क्रमिक परिवर्तन का क्रम में जाति के लोग अपने को कहाँ तक सुरक्षित या असुरक्षित अनुभव करते हैं। जैसी महत्वपूर्ण पहलुओं पर सम्यक प्रकार डालना न केवल समयानुकूल होगा, बल्कि जाति विशेष के विकास या उत्थान की नई दिशा की जानकारी भी मिल जाएगी। तात्पर्य है कि अन्वेषिका ने यह स्वीकार किया कि आज यदि एक–एक जाति पर इस प्रकार का व्यावहारिक समाजशास्त्रीय अध्ययन करके, इनकी प्रगति का प्रयास किया जाए, तो विशेष सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के

अनुकूल विकास मार्गो का चयन कर एक–एक जाति के उत्थान के लिए समुचित मार्गदर्शन मिल सकता है।

आज भारत में तीन हजार से अधिक जातियाँ तथा उपजातियाँ हैं, जिनमें ब्राह्मण जाति एक मुख्य जाति है। इस जाति का समाज ने हैसियत, पद तथा प्रतिष्ठा के संकल में सबसे उच्चा स्थान दिया। ब्राह्मणों को सामाजिक स्थिति सर्वोपरि होने के कारणों का उल्लेख करते हुए ए. आर. देसाई ने कहा है "ब्राह्मणों प्राचीन काल में विद्यमान वैज्ञानिक, ज्योतिष कृषि विद्या तथा चिकित्सा संबंधी ज्ञान के भण्डार एवं एकाधिकारी थे। प्रकृति की अलौकिक शक्तियों के संबंध में भी ब्राह्मण ही ऐसी धार्मिक तथा जादू–टोने की शक्ति वाले समझे जाते थे कि जिससे विधियाँ, मंत्राों तथा अन्य उपायों द्वारा उनको प्रसन्न तथा वंश में किया जा सकता था।"

पृथ्वी सागर, पर्वत तथा नदियों द्वारा द्वीपों और वंश–प्रदेशों में विभक्त है। पुराणों के अनुसार सात द्वीपों में एक जम्बूद्वीप है। भारतवर्ष जम्बूद्वीप में है। इसी उत्तरी सीमा पर देवहात्मा, नगाधिराज हिमालय पूर्व एवं पश्चिम समुद्र को स्पर्श करता हुआ स्थित है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार मनुष्य लोक उत्तर दिशा में है।

अथातोभूमि जीपणस्य। उदीचीन प्रवागे, करोत्युदीची वै मनुष्याणादिक्तदेन मनुष्यलोकः आभजाति।'

मनुष्य लोक में हिमाचल का उत्तृङ्ग शिखर कैलाश भगवान शंकरी निवास भूमि है और हिमालय की वनभूमि भगवती पार्वती की तपस्थली है। हिमगिरि का यह पावन क्षेत्रा अनेक पुण्यतोया नदियों का जन्म–स्थल है। गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू और नारायणी (गण्डकी) आदि विख्यात नदियों के साथ ही अल्पज्ञात नदी, देविका की उत्पत्ति भी हिमालय में ही हुई है। महर्षि पुलम्त्य द्वारा पितामह भीष्म के लिए किये गए, महाभारत के तीर्थ वर्णन प्रसंग से यह ज्ञात हाल है कि उपयुक्त देविका नदी का तट ही ब्राह्मणों का प्रादुर्भाव स्थल है।

अतऊर्ध्व प्रवक्ष्यामि देविका स्थानमुत्त्मम्।

प्रसूतिर्यत्रविप्राणाम् निबोधगदतो मम।।

ततो गच्छेत् राजेन्द्र! छेविका लोकविश्रुताम्।

प्रसूतिर्यत्र विप्राणां श्रुयते भरतर्शभ।।

चूँकि ब्राह्मणों का प्रादुर्भाव देविका नदी के तट पर हुआ इसलिए उनको प्रथम क्षेत्रीय मंत्रा हुई बाद में इन्हें सारव सरवरिया और सरयुपारीण कहा जाने लगा। भाषा परिवर्तन और पुनर्नामकरण आदि के कारण इनके नामों में बहुनामता और समानता आती गई है। अप्रचलित अल्प्रचलित एवं प्रचलित क्षेत्रीय संज्ञाओं का समूह ब्राह्मण परिचयार्थ प्रयुक्त होता दिखाई देता है। सम्प्रति 'दाक्षिक' संज्ञा अप्रचिलत हो चुकी है। ब्राह्मणों की 'गौड' संज्ञा वर्तमान समय में एक वर्ग विशेष तक सीमित होकर रह गई है। प्रायः

सभी भेदापभेद उसी के है तथापि अब यह अल्पप्रचलित संज्ञाओं में है और अपने उपशीर्षकों से जुड़कर हो जीवित है। महर्षि पाणिनि ने शब्द–जगत में ब्राह्मण से संबंधित गौड़ और गौड़ की चर्चा नहीं है। गौड़ देश की सर्वप्रथम चर्चा संभवतः मत्स्यपुराण में की गई है। अत्यंत प्राचीन न होते हुए भी गौड़ संज्ञा का प्रचर प्रयोग किया गया है।

प्राचीन समय में भारतीय विद्वान चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा का मत है कि कोसल प्रदेश, जिसकी राजधानी अयोध्या थी, दो भागों में बंटा हुआ था। उनके नाम उत्तरकोमल और दक्षिण कोसल थे। पुनः उत्तर कोसल में भी दो विभाग थे। एक का नाम था गौड़ औश्र दूसरे का कोसल। राप्ती नदी के दक्षिण तटवर्ती प्रदेश को गौड देश कहते हैं। इसी गौड़ देश में श्रावस्ती नगरी विद्यमान है। श्रावस्ती नगरी का ध्वंसावशेष गौड़ा नगर है।

पं. बटुक प्रसार मिश्र का कहना हैः

उत्तरस्यां विशालोडयम् ख्यातो लोकंषु पावनः।।

हिमालयाभिखानोडयम् ख्यातो लोकेषु पावन।::

एण्डक्याः पश्चिम भाग गौडदेशः प्रकीर्तिवः।

तर्थेव मारवा देशः सरयवा"चोत्तरे तटे।।

पूर्वोक्तानां चतुर्दिक्षुतीर्थानाममध्यभागभाक्।

गौड संज्ञा इयं देशे पूर्व तस्य प्रकीत्तिता।।

अर्थात् उत्तर दिशा में हिमालय तथा गण्डकी के पश्चिमी भू–भाग में गौड़ देश कहा गया है, इसी भाँति सरयू का उत्तरी तटवर्ती क्षेत्रा सारब संज्ञक है। पूर्वोवत चारों दिशाओं के मध्यार्ती, इस क्षेत्रा की संज्ञा, पहले गौड कही जाती थ्भ।

पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र का कहना है कि जिस देश को सीमा, पूर्व में गंगा और गण्डाकी का संगम, पश्चिम और दक्षिण दिशाओं में सरयू तथा उत्तर में हिमालय है, इसके मध्य की भूमि का नाम गौड़ देश है। गण्डकी नदी के पश्चिम की भूमि गौड़ देश कही जाती है, इस स्थान में जो ब्राह्मण सृष्टि के आरंभ से रहते हैं, वे आदि गौड़ रहे जाते हैं।

पं. इंद्रदेव चतुर्वेदी के विचार में यही सरयू पारीणकुल ही आदि ब्राह्मण कुल और यही देश ब्रह्मदेश है। यहीं से भिन्न–भिन्न रूप में भिन्न–भिन्न नामों से यंत्र–तंत्रा ब्राह्मण कुल का विस्तार हुआ।

गौण ब्राह्मण विस्तृति को पुस्तकों में उसके अनुसार के राजा जनेाय ने नटेश्वर मुनि को उनके .किया राजा ने यज्ञ समाप्ति के पश्चात् रूचि की दानग्रहण में देखकर पान के बीड़ा में एक–एक धाम दान को पत्रिका रखकर शिष्यों सहित मुनि का समखपत कर दिया। अनजाने में ही हुए इस भूमि–प्रतिगत के

परिणामस्वरूप सभो ब्राह्मण को ऊपर चलने की सामर्थ्य समाप्त हो गई। ब्राह्मणों द्वारा कारण पूछने पर राजा ने क्षमा करते हुए स्पष्ट किया कि बिना दक्षिणा दान के यज्ञ को मांगता नहीं होती, अतः आप लोग कृपा करके क्षमा करें। क्षमा प्राप्ति के पश्चात् राजा जनजेज्ञय ने सभी ब्राह्मणों को राज्य में स्थापित किया ये सब गौड़ देशवासी गौड़ ब्राह्मण थे तथा वेद, शास्त्रा और के ज्ञाता तथा स्मार्त कर्मो के करने वाले थे। इनकी शाखा माध्यन्दिनी, शूक्ल यजुर्वेद, सूत्रा, कात्यायन एवं गोत्रा गौतमादिक है। ये 1444 गाँवों के निवासी हुए। में प्राप्त 1444 गाँवों में निवास के फलस्वरूप इनके इतने ही ग्राम आस्पद (शासन) प्रसिद्ध हुए। उल्लिखित गौड़–विस्तार कथा के ये स्वीकार्य तथ्य है।